बड़ों के लिए दो बातें...

यह किताब ऐसे लिखी गई है कि बच्चे अपने आप यह पता लगा सकें कि पढ़ने में कितना मज़ा आता है। चित्र बनाने की शुरुआत लाइन से होती है और इस कहानी में एक खिलन्दड़ी लड़का खूब मौज करते हुए एक लाइन मात्र से अपनी दुनिया को रचता चला जाता है। ऐसा लगता है कि इस किताब को जो भी पढ़ेगा, या इस किताब से जो भी पढ़ना सीखेगा, वह लाइन के साथ खेलते-खेलते चित्र भी बनाएगा। उसे लगेगा जितना मज़ा पढ़ने में है, उतना ही चित्र बनाने में भी, बस शुरू करने की देर है।

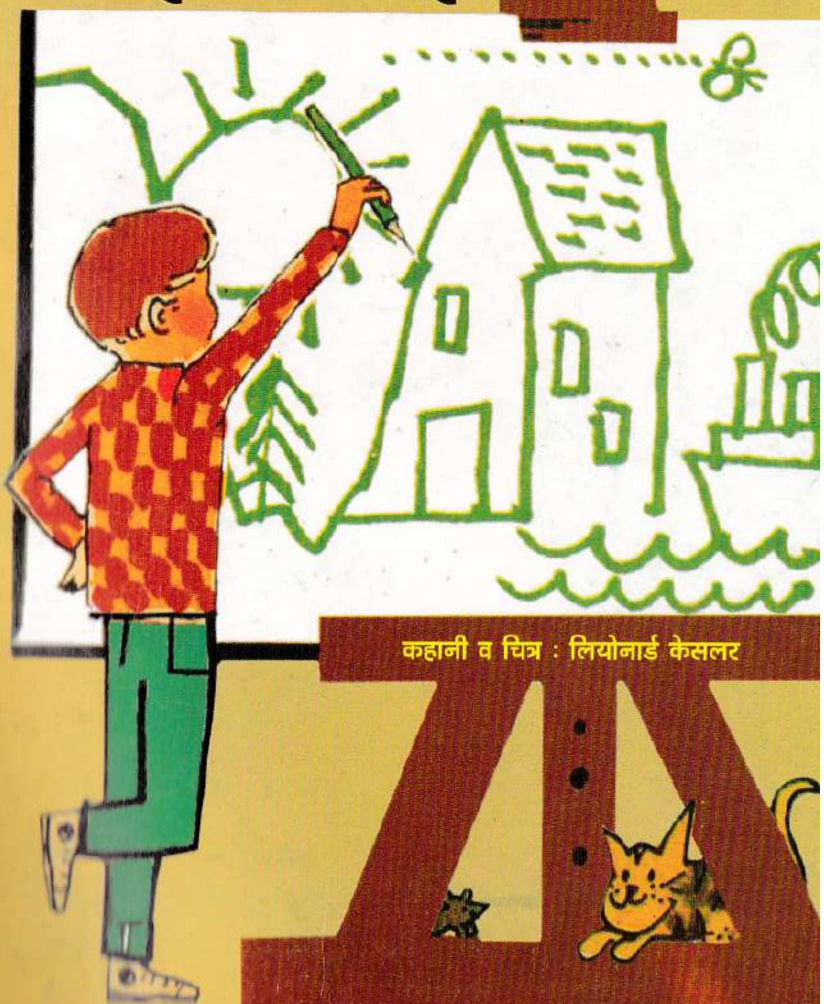
बड़े लोग इस बात पर गौर करेंगे कि इस किताब के वाक्य छोटे-छोटे हैं, शब्द बहुत सरल हैं, और शब्दों का बार-बार और रचनात्मक दोहराव पढ़ने की क्रिया में मददगार साबित होता है। इस किताब के पन्ने पलटकर किसी भी नन्हे पाठक को यह महसूस होगा कि "यह तो बहुत मज़ेदार है। मैं इसे खुद पढ़ सकती हूँ!"

हो सकता है कि आपको कुछ बच्चों को शुरू में यह कहानी पढ़कर सुनानी पड़े। कुछ और बच्चों को पढ़ते हुए थोड़ी मदद की ज़रूरत हो सकती है – ऐसी मदद जो आप अनायास उन्हें दे दें। पर पहली, दूसरी और तीसरी कक्षा के वे बच्चे जो अब खुद से पढ़ना सीख गए हैं इसे "अपने-आप" पढ़ते हुए इसका भरपूर आनन्द उठाएँगे।

ISBN : 81-87171-74-X

मूल्य : 30.00 रुपए

मैंने एक लाइन बनाई



कहानी व चित्र : लियोनार्ड केसलर

एकलव्य का प्रकाशन

मैंने एक लाइन बनाई

कहानी व चित्र : लियोनार्ड केसलर

अँग्रेज़ी से अनुवाद : तेजी ग्रोवर

एकलव्य का प्रकाशन



मैंने एक लाइन बनाई

Maine Ek Line Banayee

कहानी व चित्र : लियोनार्ड केसलर

मूल अंग्रेज़ी पुस्तक *I Made A Line* का अनुवाद

अनुवादक : तेजी ग्रोवर

मई 2006 / 3000 प्रतियाँ

70 gsm मेपलिथो एवं 170 gsm आर्टकार्ड (कवर) पर प्रकाशित

मूल्य : 30.00 रुपए

ISBN 81-87171-74-X

सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

एवं लेखक की अनुमति से प्रकाशित

प्रकाशक : एकलव्य

ई-7/एच आई जी 453, अरेरा कॉलोनी

भोपाल - 462 016 म.प्र.

फोन : (0755) 246 3380

फैक्स : (0755) 246 1703

ई-मेल : eklavyamp@mantrafreenet.com

सम्पादकीय : eklavyabooks@gmail.com

मुद्रक : भण्डारी प्रिंटर्स, भोपाल, फोन (0755) 246 3769



देखो,

एक पेन्सिल!



कितना अच्छा लिखती है!

तो मैं क्या बनाऊँ?



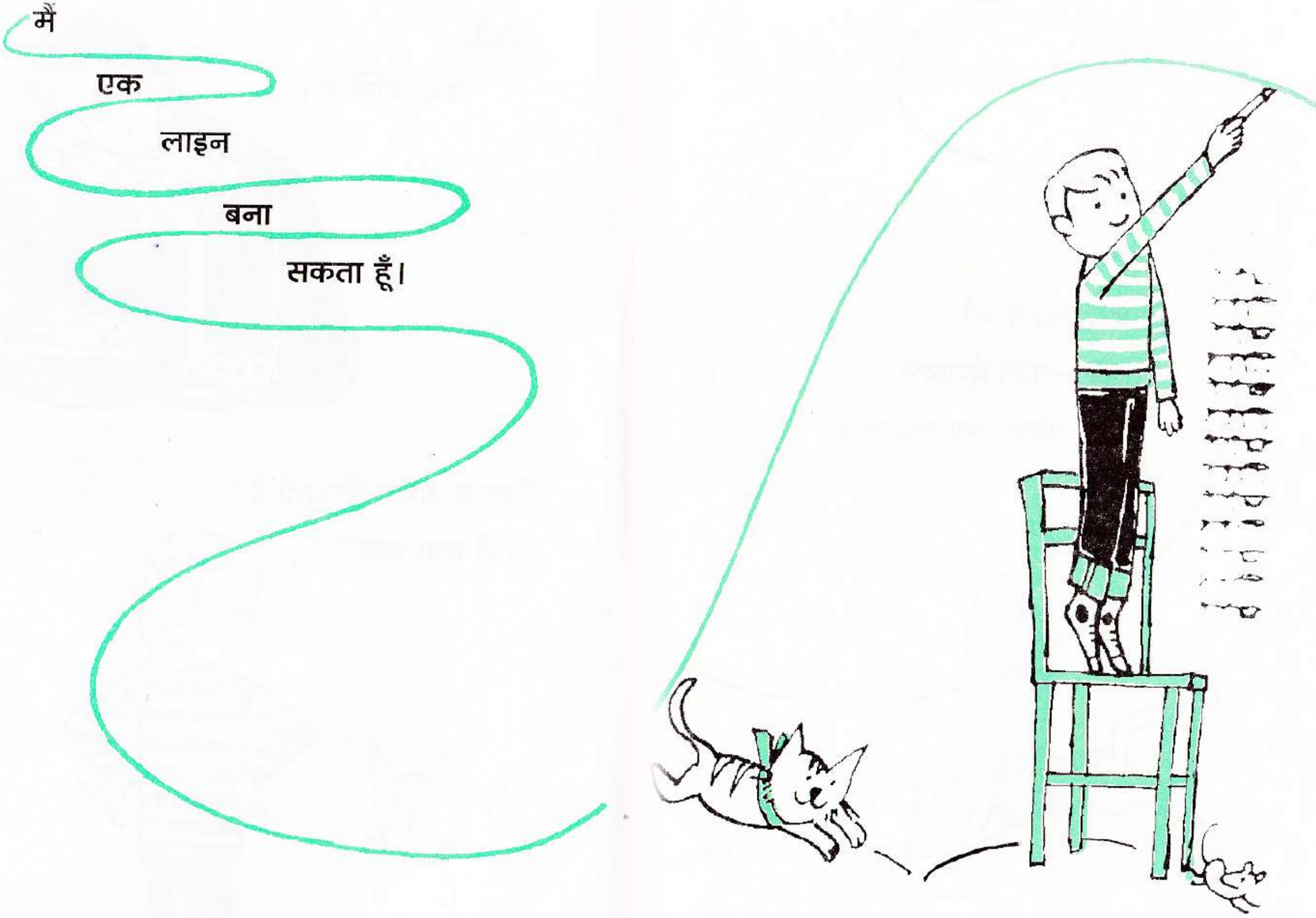
मैं

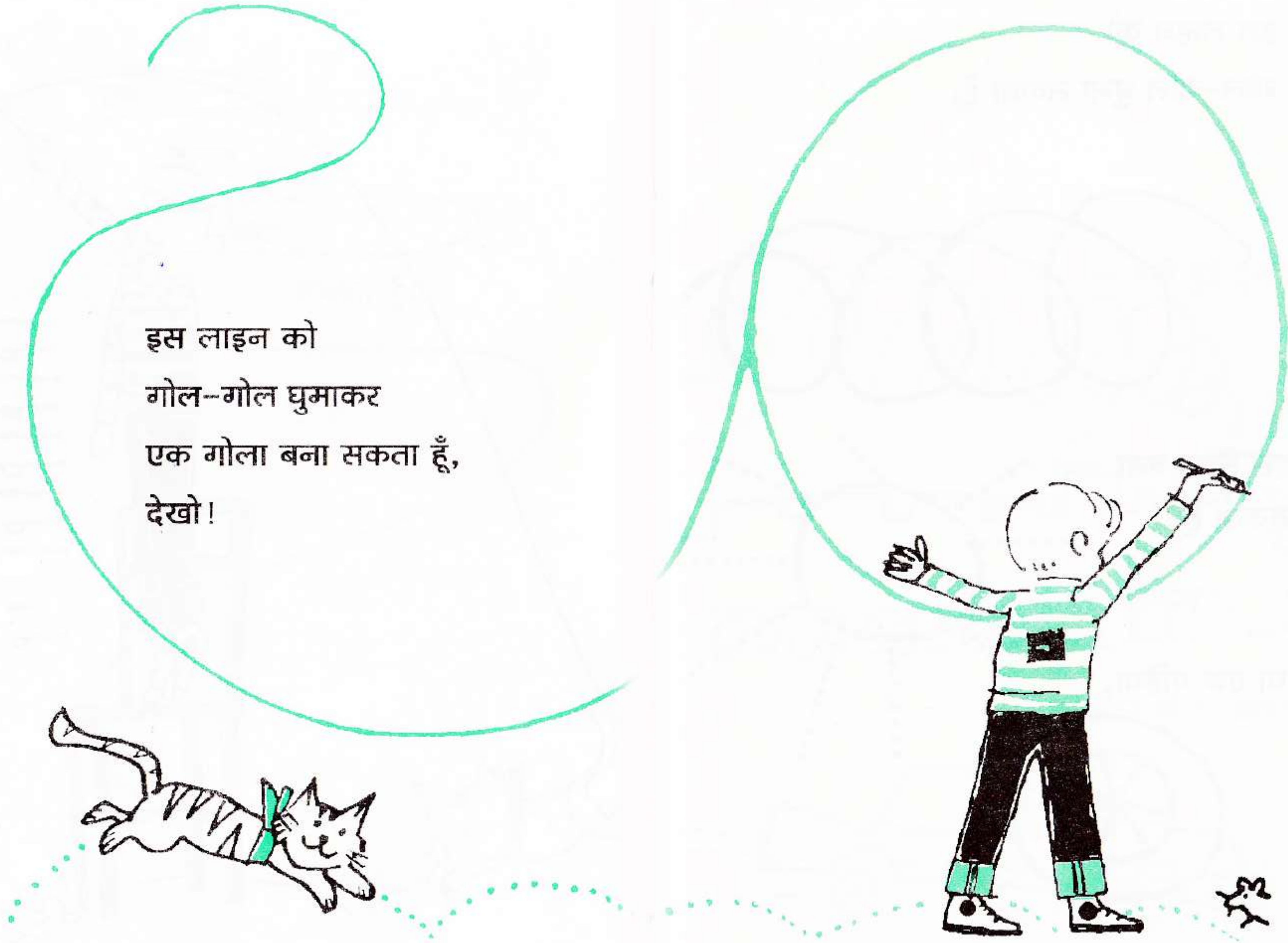
एक

लाइन

बना

सकता हूँ।

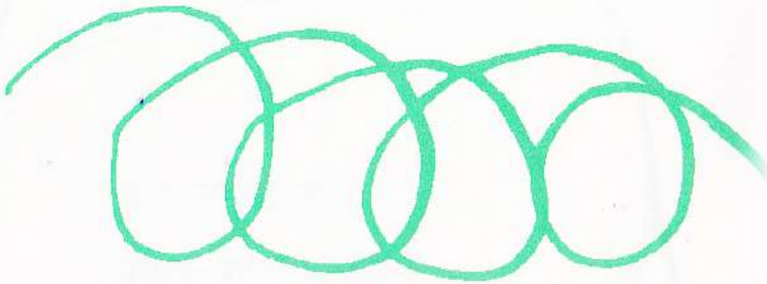




इस लाइन को
गोल–गोल घुमाकर
एक गोला बना सकता हूँ,
देखो!

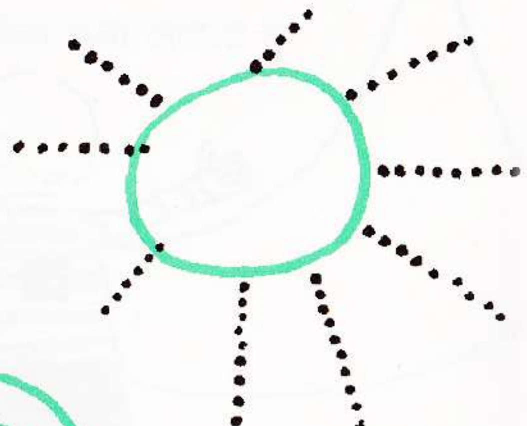
इस लाइन को

गोल-गोल घुमा सकता हूँ,

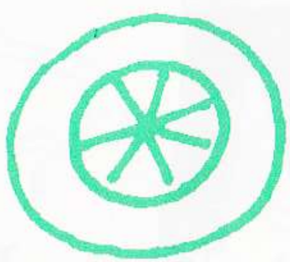




इसे सूरज बना
सकता हूँ,

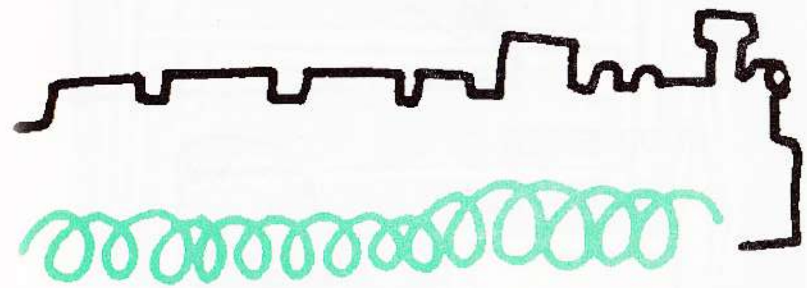


या एक पहिया,

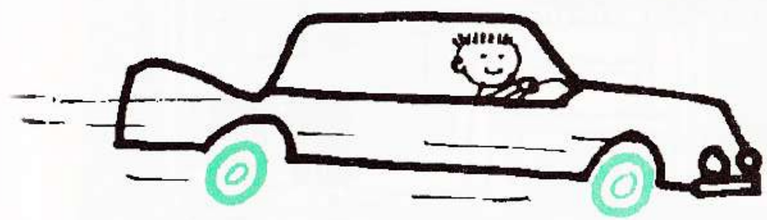


भागती हुई ट्रेन,



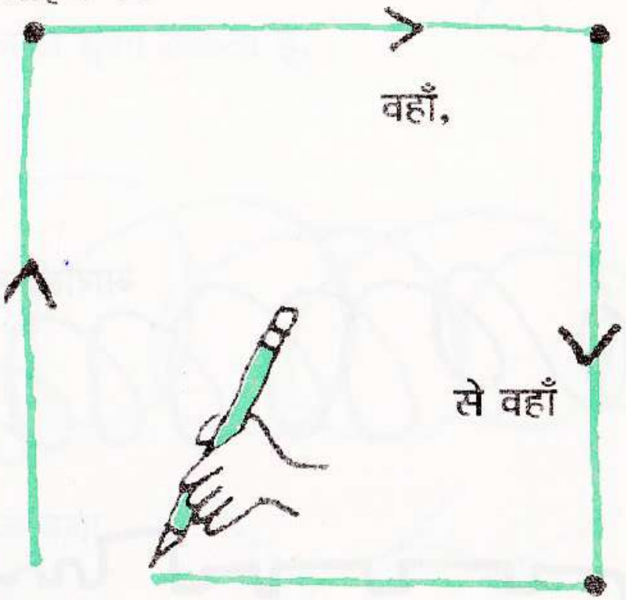


या फिर मोटर कार।



मैं इस लाइन को

यहाँ से



वहाँ,

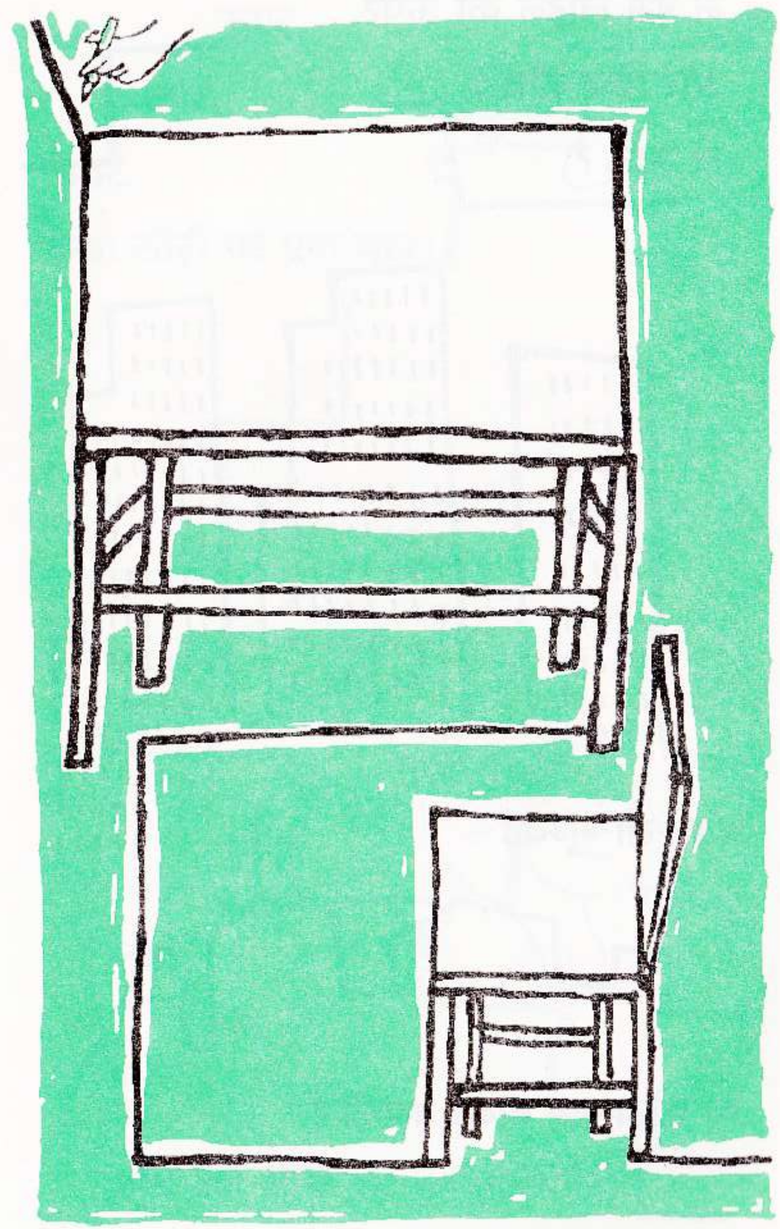
से वहाँ

ले जा सकता हूँ।

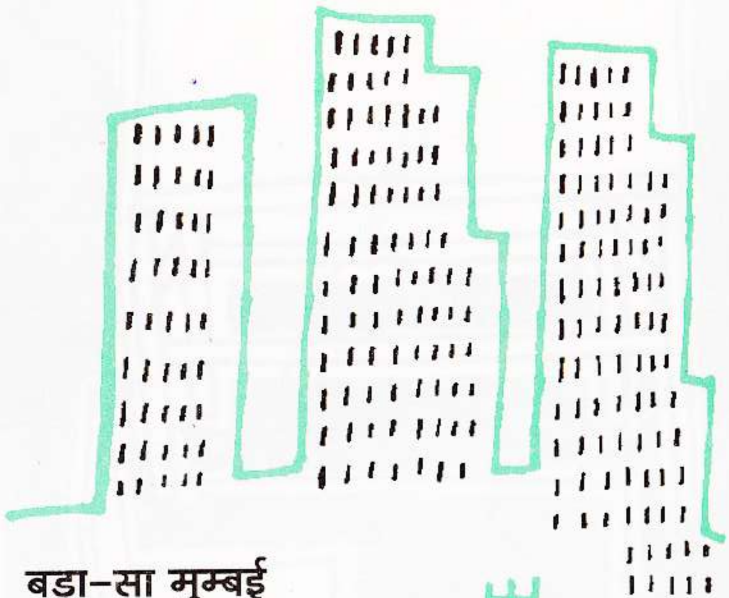


देखो –

यह बन गया चौकोर!



मैं इस लाइन को ऊपर
और फिर नीचे
ले जाऊँ?



बड़ा–सा मुम्बई



या छोटा–सा बाबई बनाऊँ?

ऊपर,
ऊपर,
ऊपर,
देखो सीढ़ी पर एक चूहा।

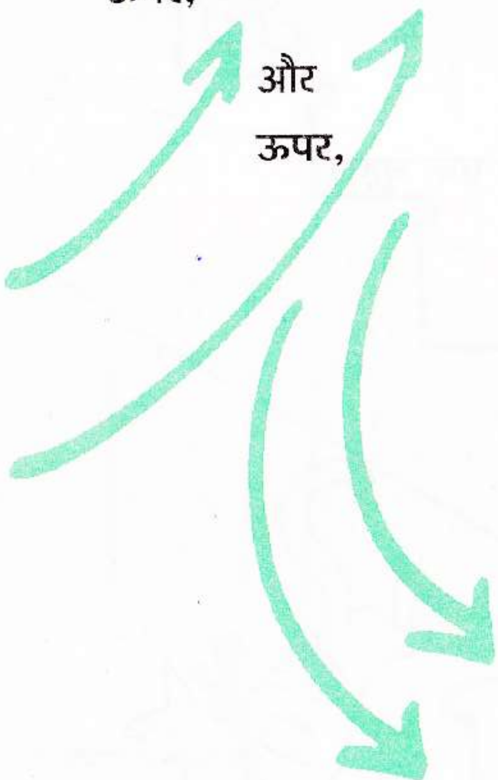


नीचे,
नीचे,
नीचे,
और इस सीढ़ी पर एक बिल्ली।

ऊपर,

और

ऊपर,



नीचे,

और नीचे,

ऊपर और नीचे

जैसे हँसते होगे तुम।



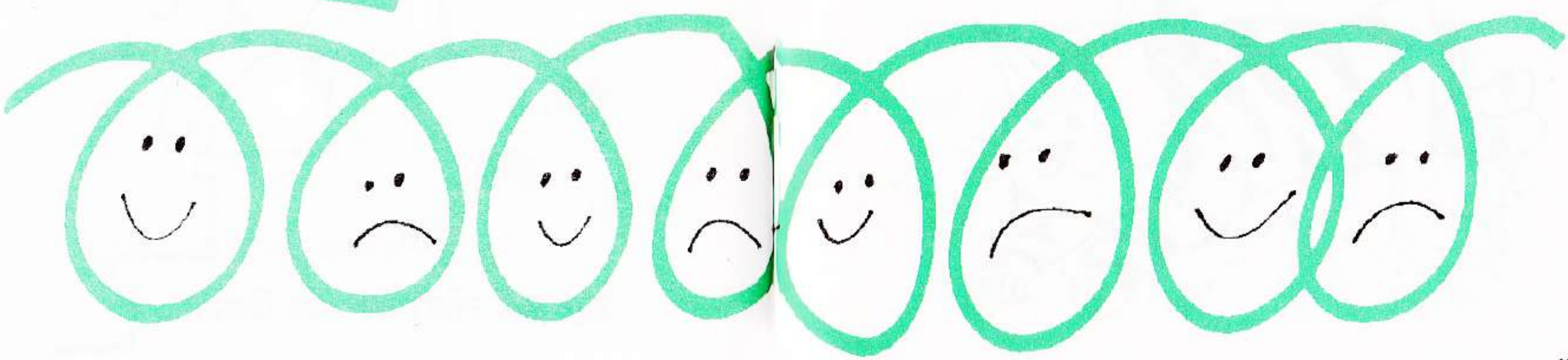
ऊपर और नीचे,

जैसे रोते होगे तुम।



ऊपर और नीचे और

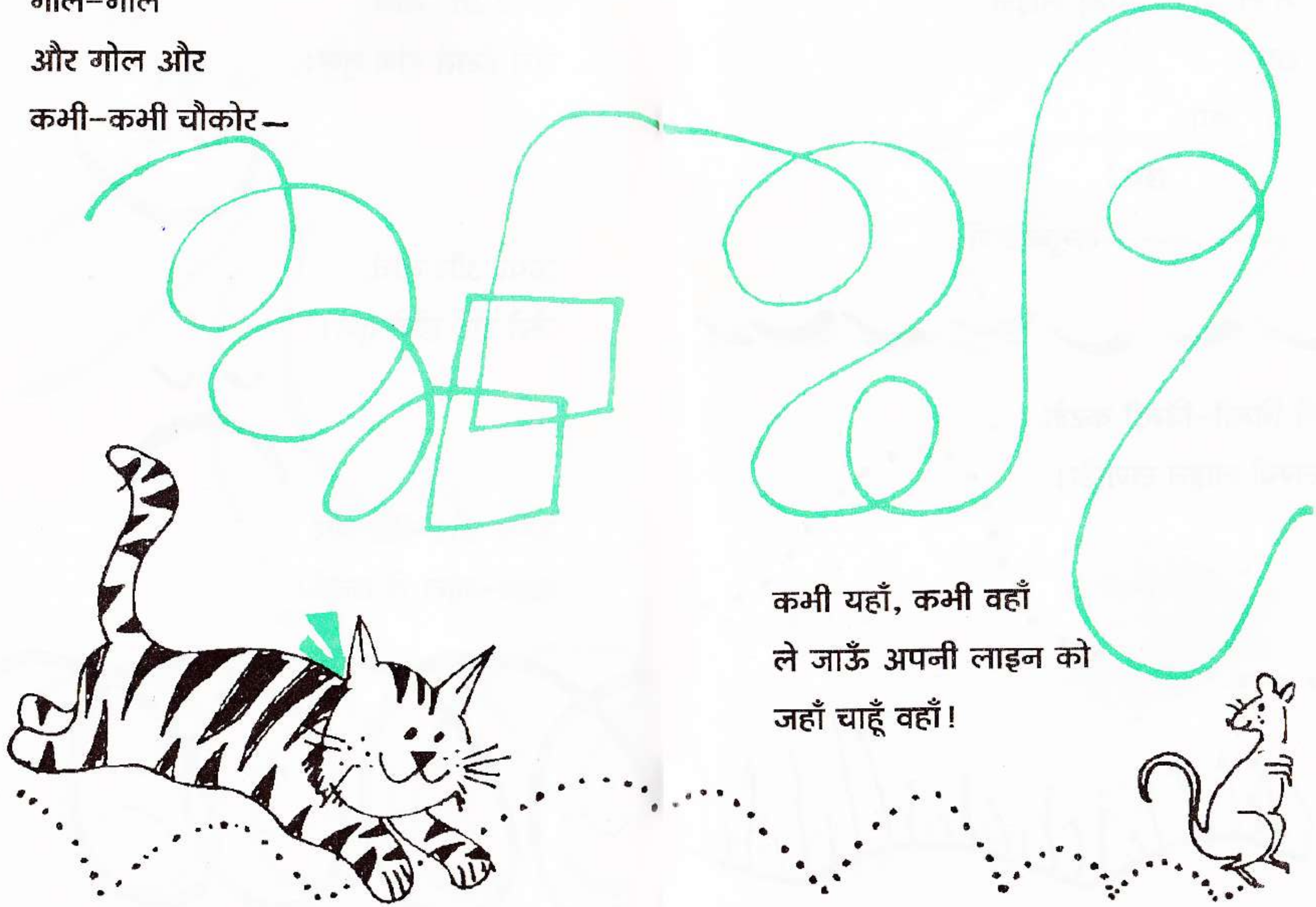
गोल–गोल से छल्ले।



गोल–गोल

और गोल और

कभी–कभी चौकोर—



कभी यहाँ, कभी वहाँ

ले जाऊँ अपनी लाइन को

जहाँ चाहूँ वहाँ!

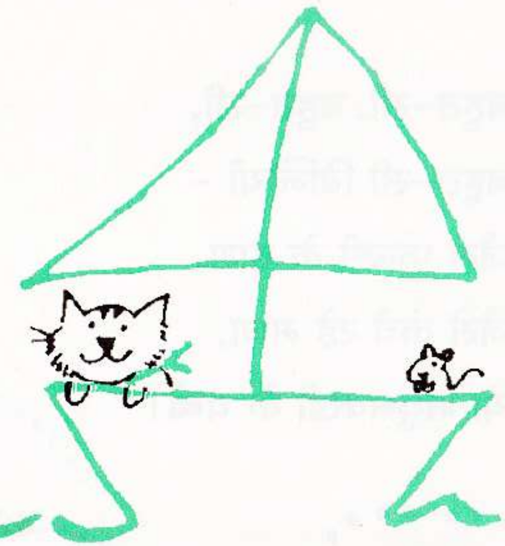
मैं ले जाऊँ अपनी लाइन

छप,

छप,

छप,

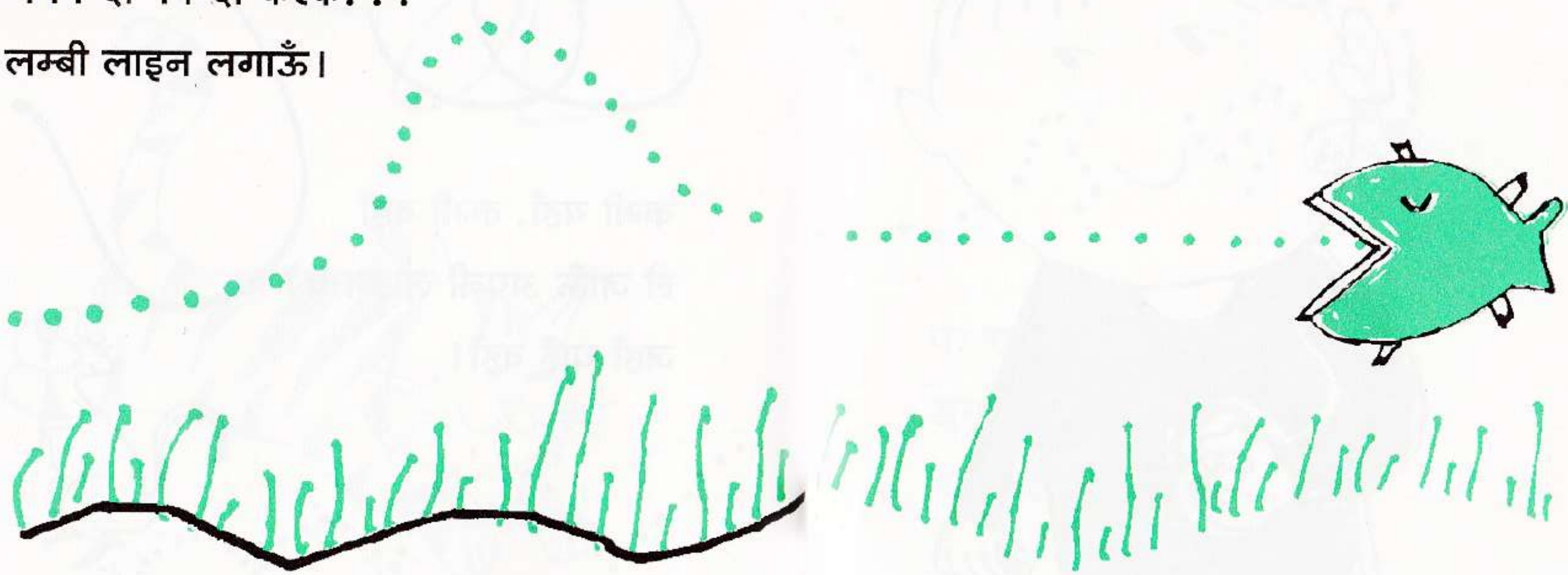
समुन्दर में।





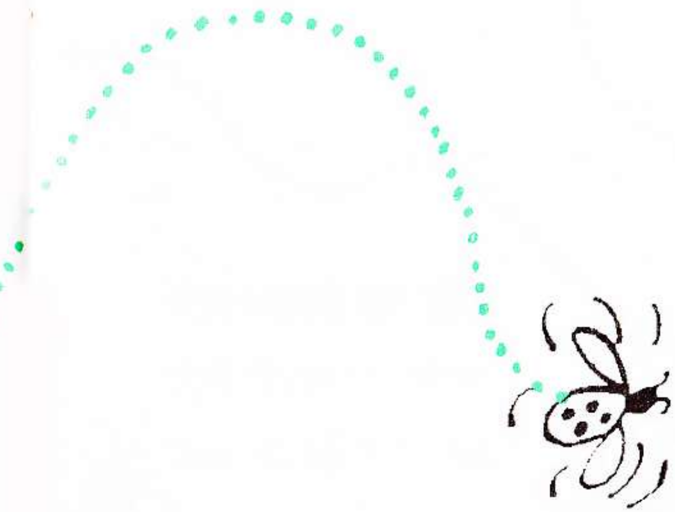
मैं बिन्दी–बिन्दी करके. . .

लम्बी लाइन लगाऊँ।



बहुत–सी, बहुत–सी,
बहुत–सी बिन्दियाँ –
जैसे फुन्सी के दाग,
जैसे कंचे रहे भाग,
या मधुमक्खी के धब्बे।





पर गुनगुन गुनगुन,
सुन मेरी बात,
बस मुझे मत काट!

मैं बना सकता हूँ

बस

एक

छोटी–सी

बिन्दी,



जैसे मक्खी की आँख

जैसे मेंढक की आँख

जैसे लकड़ी की आँख।



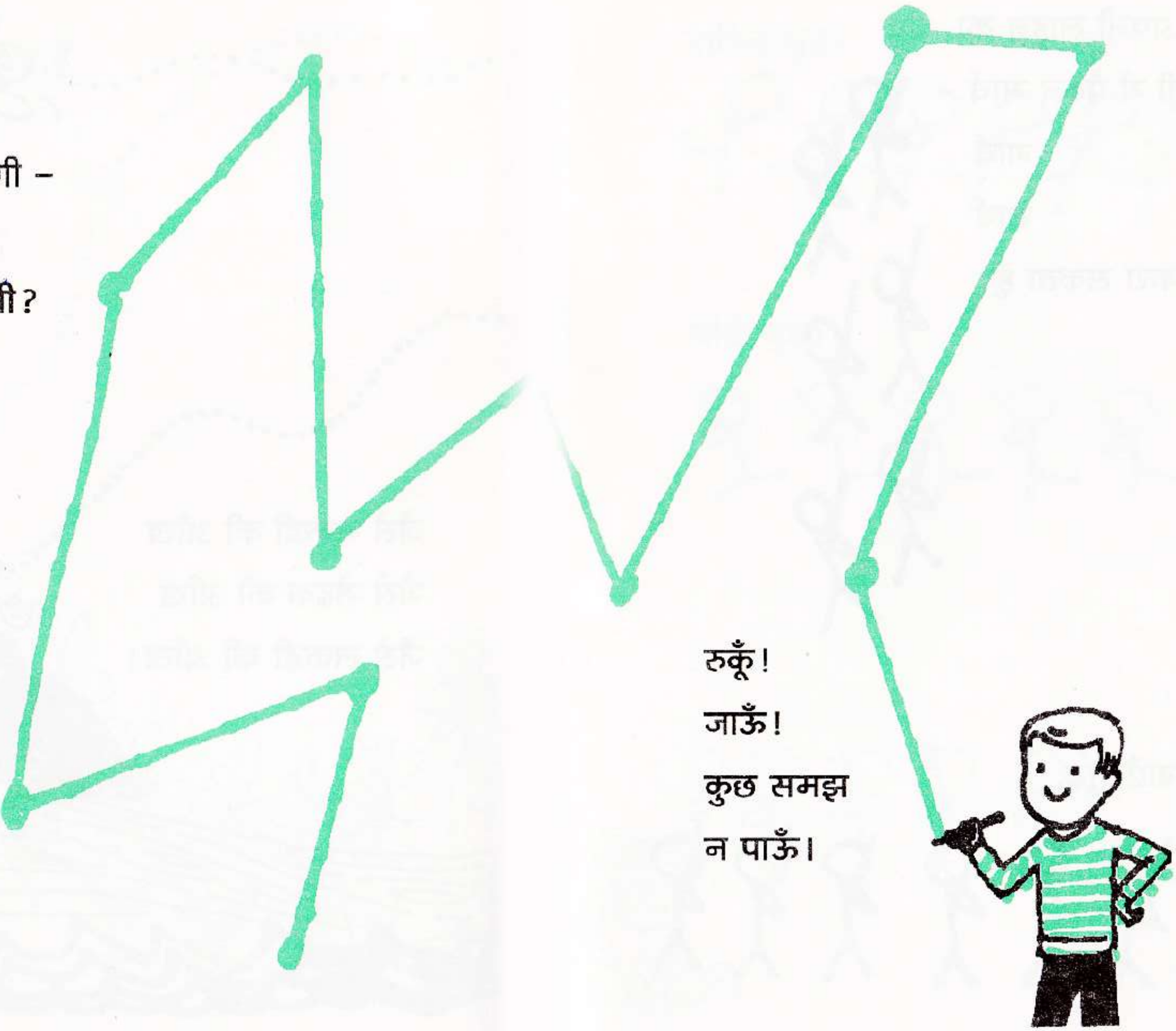
मेरी लाइन

रुकेगी

या जाएगी –

जाएगी

या रुकेगी ?



रुकूँ !

जाऊँ !

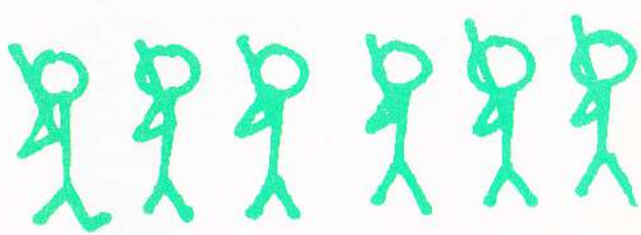
कुछ समझ

न पाऊँ।

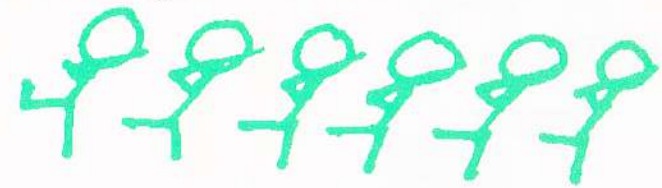
मैं अपनी लाइन को
गली में पैदल मार्च –
मार्च
मार्च
करा सकता हूँ।



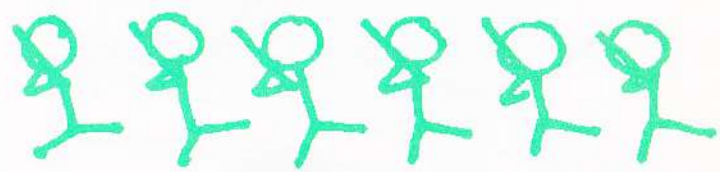
बाएँ मुड़,

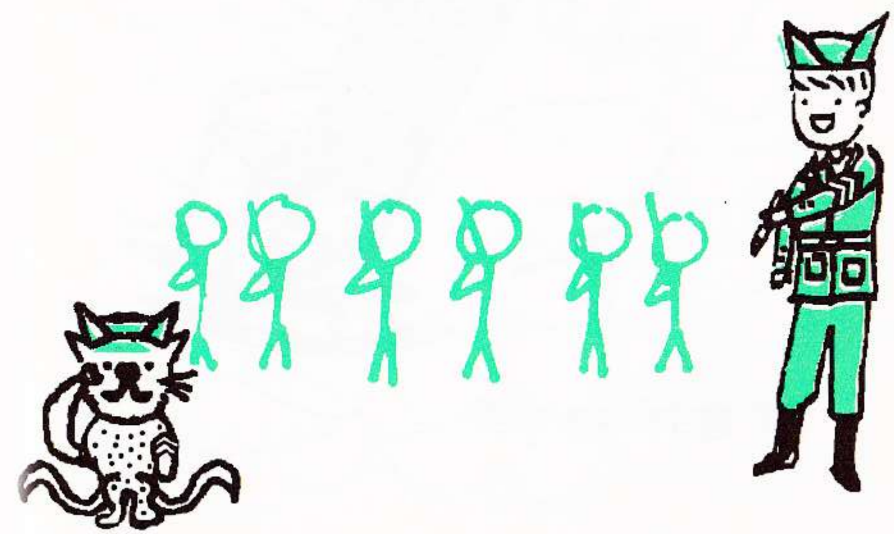


दाहिने मुड़।



पीछे मुड़!



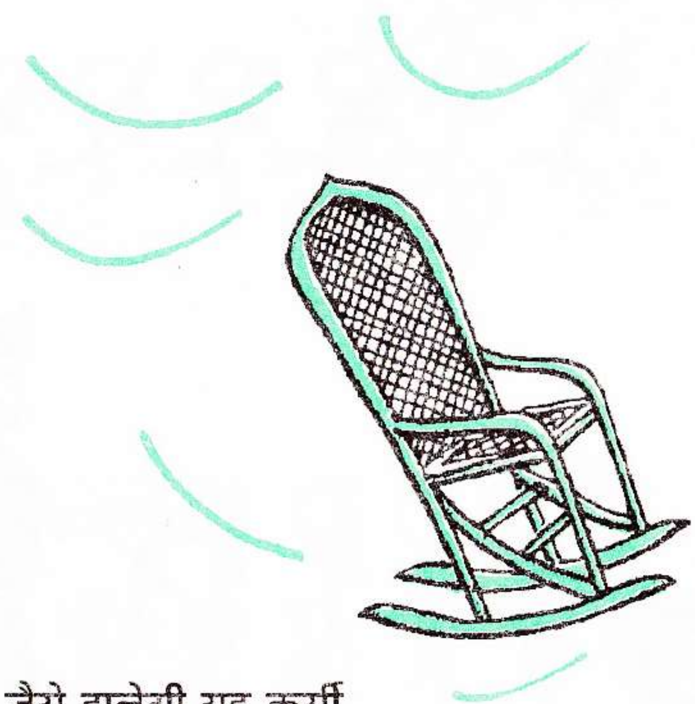


क्या मैं इस लाइन को

झुलाऊँ,

झुलाऊँ,

झुलाऊँ,



जैसे झूलेगी यह कुर्सी

या पानी में यह नाव।



कूद,

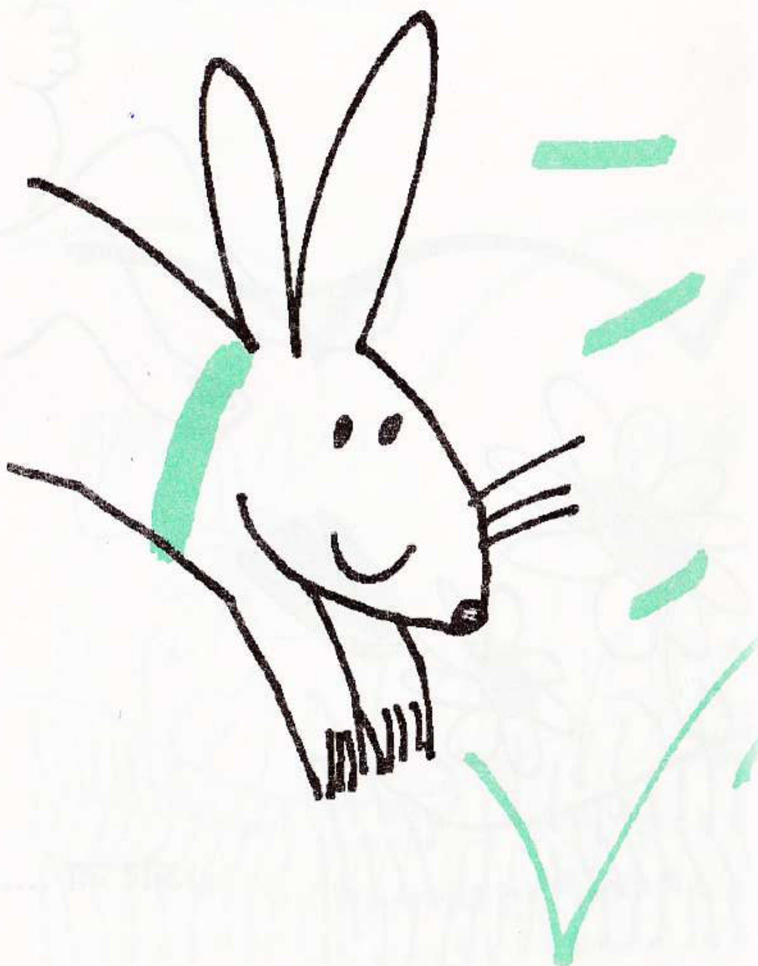
कूद,

कूद मेरी लाइन



और जा .....

छलाँग लगा!



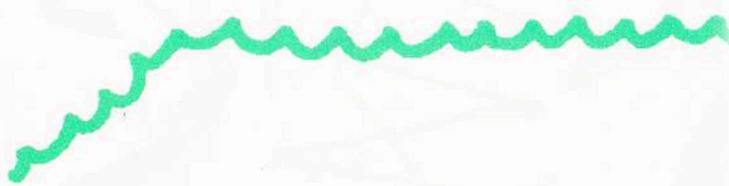


जा

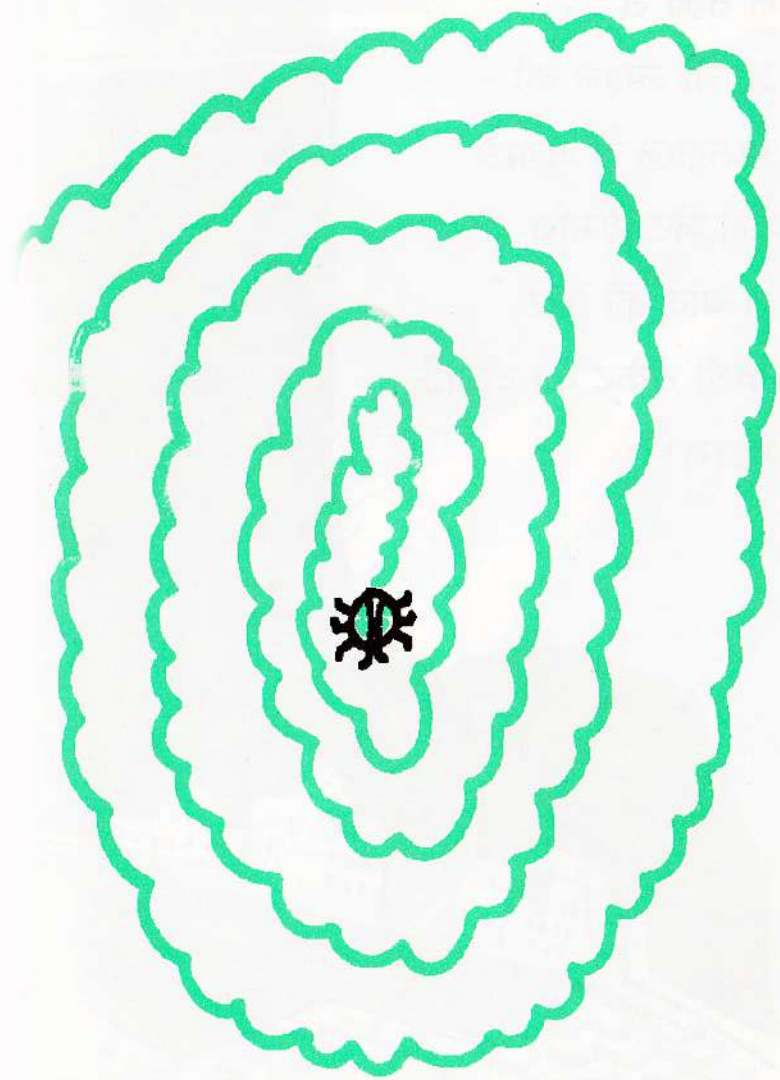
और स्प्रिंग बन जा

जोकर–किंग का!

अब देखो मेरी लाइन,
मोटू कीड़े की तरह
हरे पायदान पर
रेंग,
रेंग,
रेंग रही है,



धीरे,
धीरे,
धीरे।



धड़ाम!

मैं तेज़ी से

अपनी लाइन को –

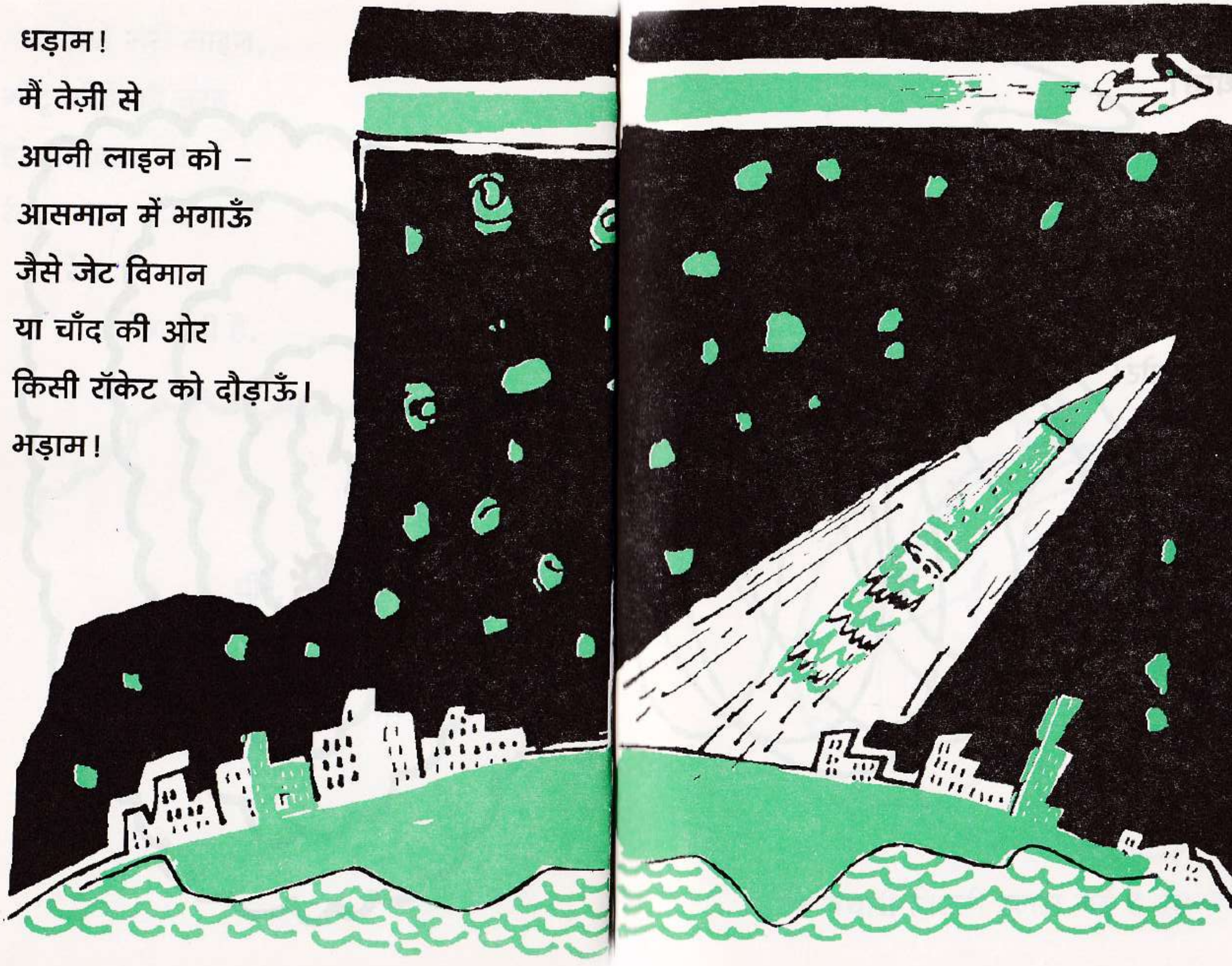
आसमान में भगाऊँ

जैसे जेट विमान

या चाँद की ओर

किसी रॉकेट को दौड़ाऊँ।

भड़ाम!



तेज़।

धीमे।

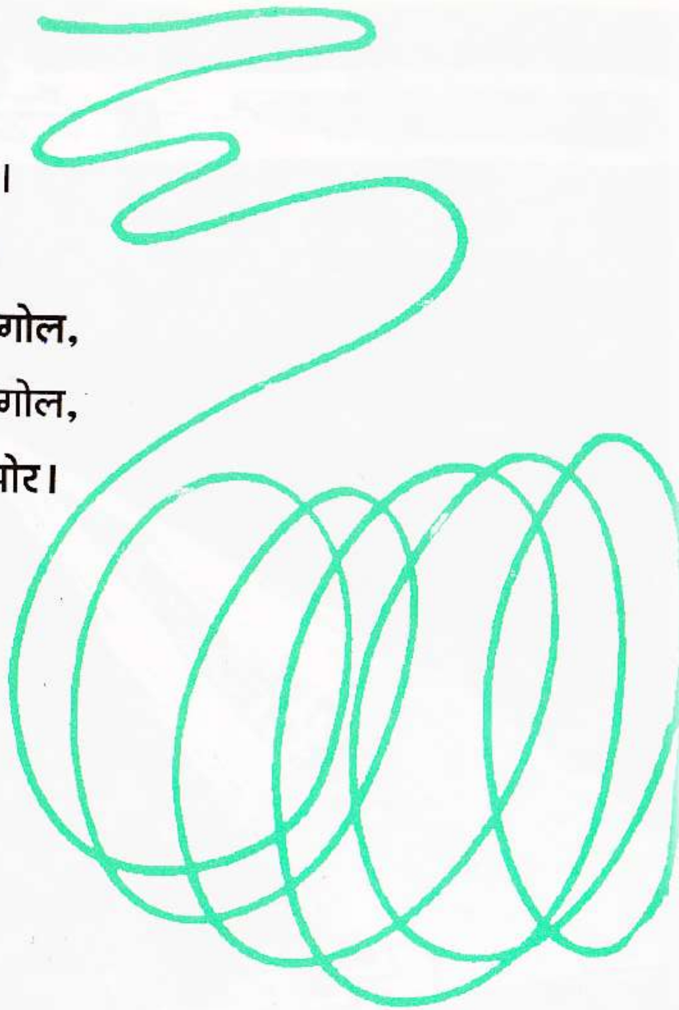
अन्दर।

बाहर।

गोल–गोल,

गोल–गोल,

चारों ओर।





यह बेचारी बिल्ली उलझ गई है अन्दर!

मैं क्यों न

अपनी लाइन को

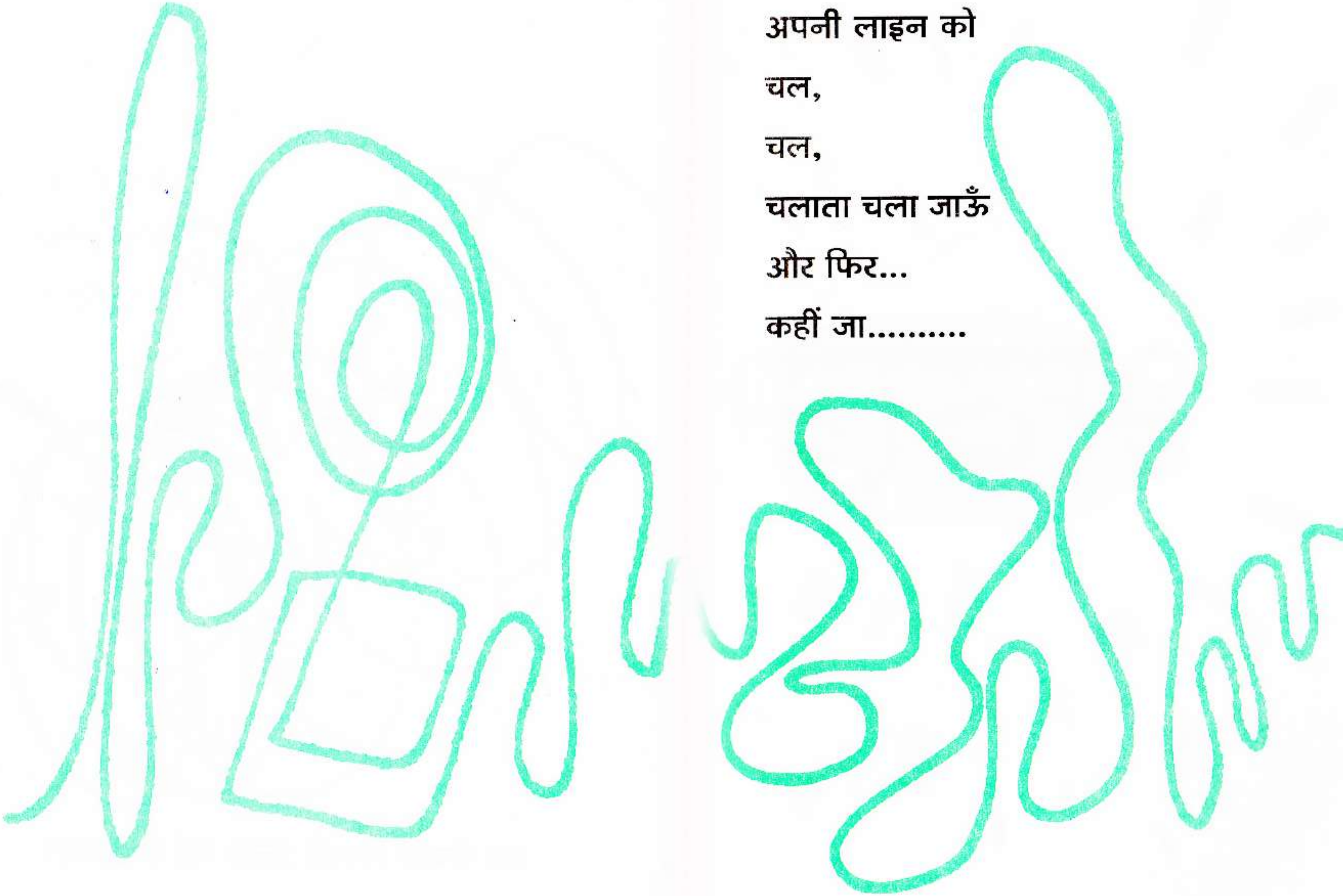
चल,

चल,

चलाता चला जाऊँ

और फिर...

कहीं जा..........



टकराऊँ !

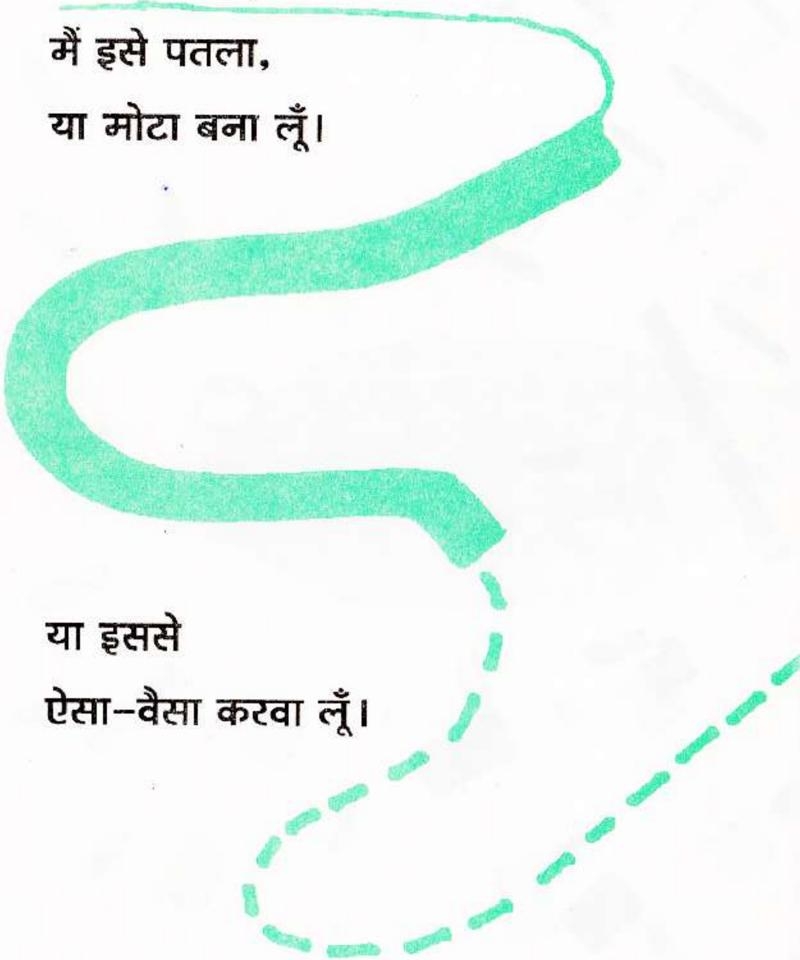


देखो क्या-क्या करता हूँ मैं

बस एक लाइन से।

मैं इसे पतला,

या मोटा बना लूँ।



या इससे

ऐसा-वैसा करवा लूँ।

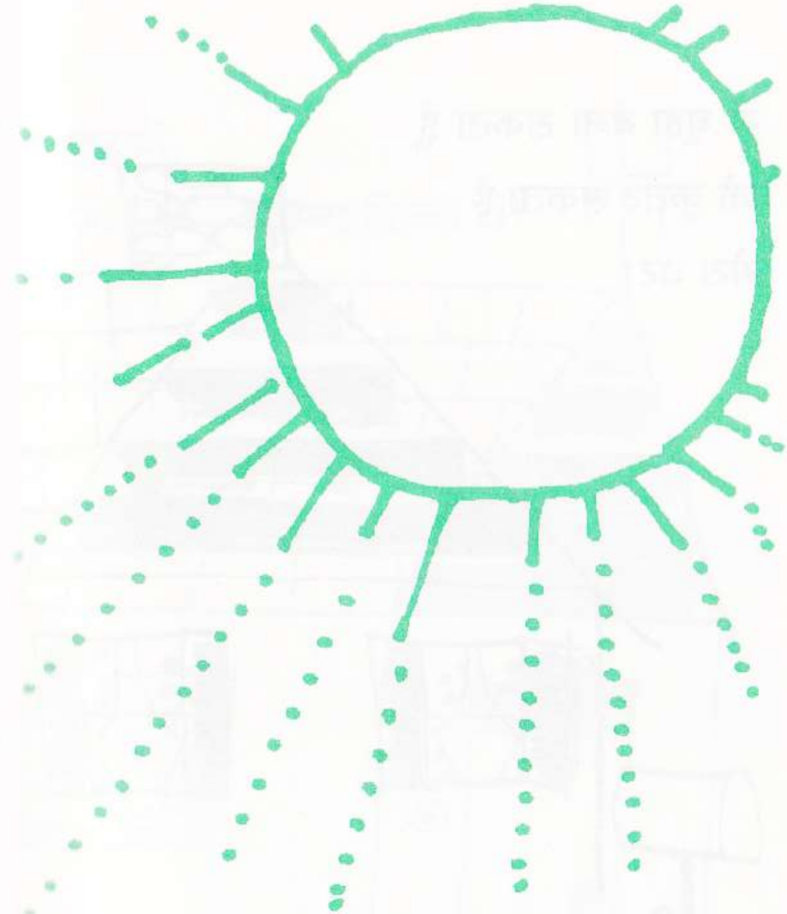
ऐसा-वैसा करवाऊँ?



एक मज़े की बिल्ली बनाऊँ?

या आज पानी गिराऊँ?





और फिर सारी की सारी
बारिश को सुखाऊँ,
ताकि मज़े से खेल पाऊँ।

मैं चूहा बना सकता हूँ
जो कुतर सकता है
मेरा घर।

छुटकी,
ज़रा बचकर रहना बिल्ली से!





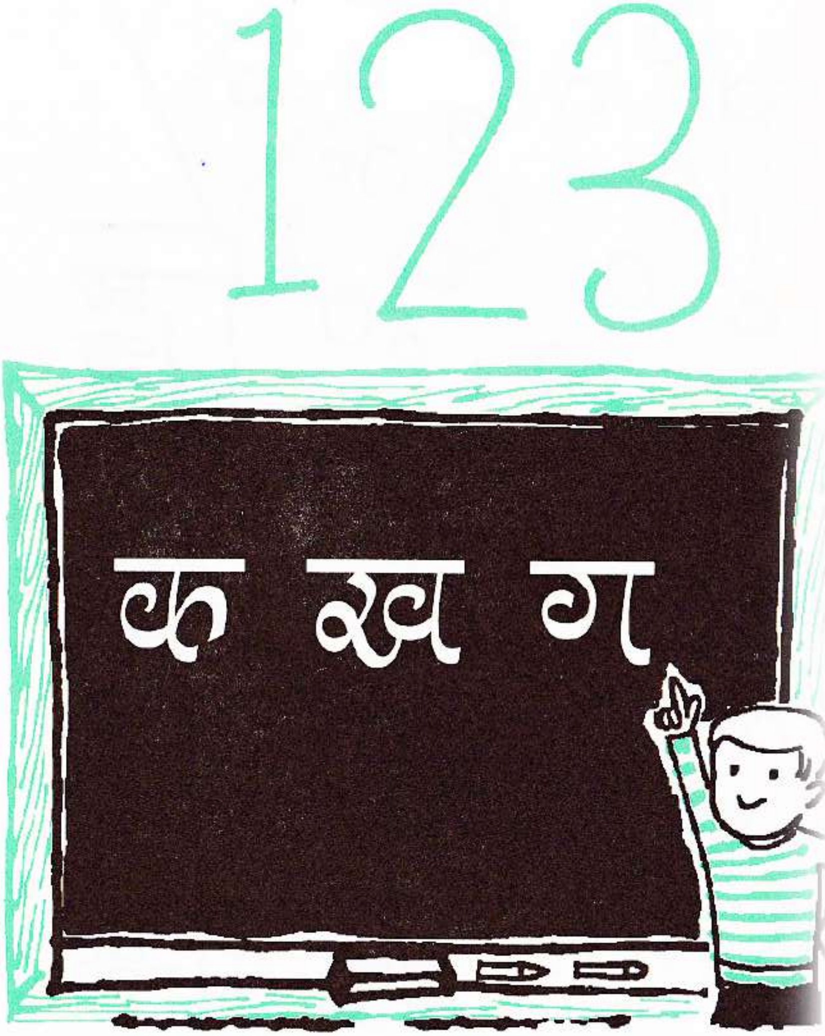
मैं फूल बना सकता हूँ।
बना सकता हूँ पेड़ भी।

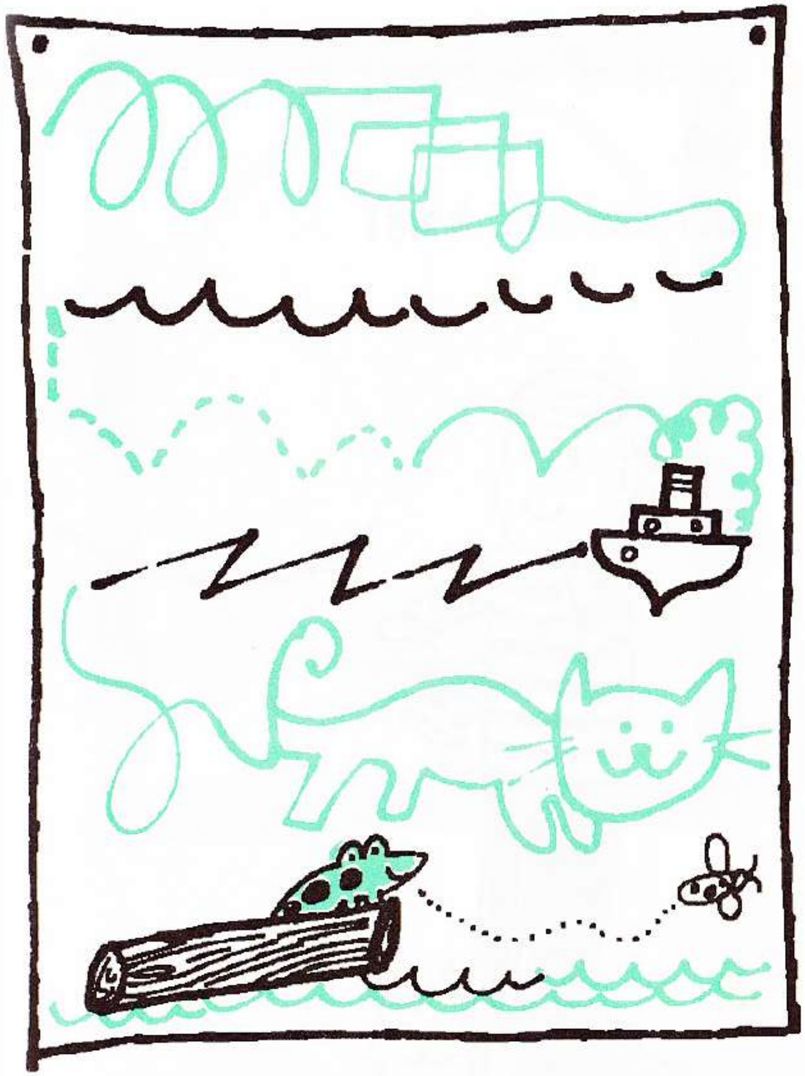
मैं बर्फ बना सकता हूँ।
हर चीज़ जमा सकता हूँ।



मैं 1 2 3 बनाऊँ

या क ख ग।





मैं एक लाइन से

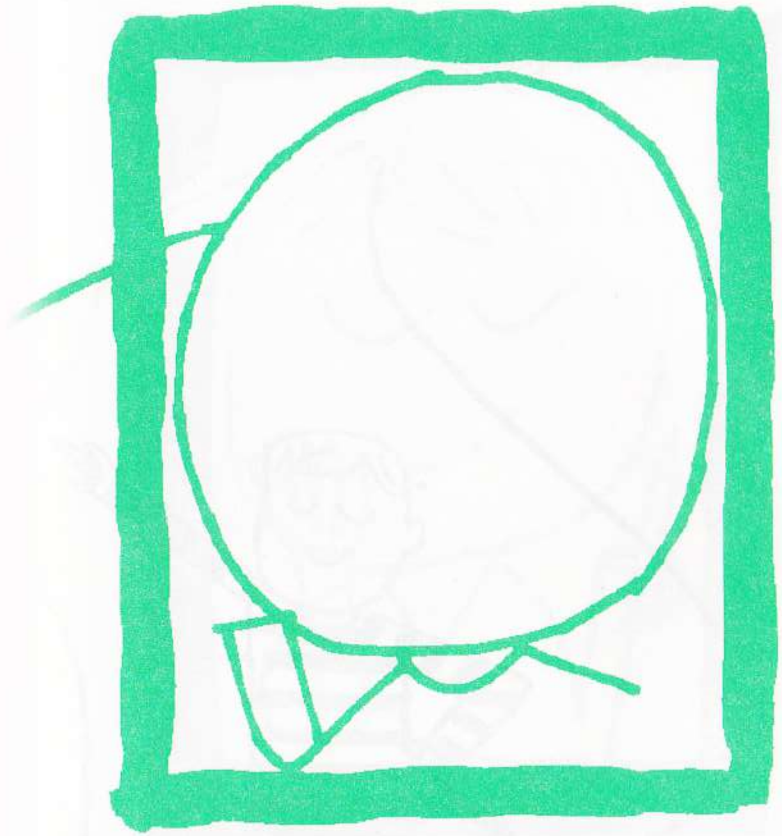
यह सब कुछ बना सकता हूँ!

लो यह रही एक लाइन।

देखें,

क्या-क्या बनती है यह।





गोल-गोल और

गोल-गोल, गोल-गोल,

यहाँ-वहाँ, वहाँ-यहाँ।

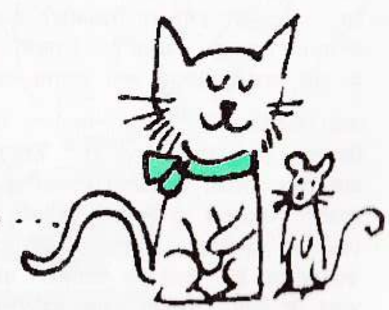
अरे यह क्या हुआ!





यह तो बिल्कुल

मेरे जैसी है!





लियोनार्ड केसलर पिछले पचपन सालों से बच्चों के लिए किताबें रचते आ रहे हैं। उन्होंने 200 से भी ज़्यादा किताबों के लिए चित्र बनाए हैं जिनमें से अधिकतर उन्होंने लिखी भी खुद ही हैं। लगभग 40 किताबों की रचना उन्होंने अपनी पत्नी इथेल के साथ मिलकर की है। इनमें से ज़्यादातर पढ़ना शुरू करने वाले बच्चों के लिए लिखी और डिज़ाइन की गई हैं। केसलर की तीन किताबें *न्यू यॉर्क टाइम्स* द्वारा चयनित बच्चों की दस सबसे अच्छी चित्रित किताबों की सूची में रही हैं।

यह पूछे जाने पर कि आपको लेखक और चित्रकार बनने की प्रेरणा कहाँ से मिली, लियोनार्ड केसलर बताते हैं, "मुझे हमेशा से ही चित्र बनाना अच्छा लगता था... छह साल की उम्र से ही... जबसे मेरी प्यारी नानी मार्था, जो सबसे शानदार पक्षियों के चित्र बनाती थीं, ने मुझे पहलेपहल मोमचॉक (क्रेयोलास) लाकर दिए... मैं तो उनका दीवाना हो गया... क्या कमाल था... सीधे ही रंगों से चित्रकारी करना। मुझे शब्दों से भी प्यार था... कविताएँ लिखना... कहानियाँ लिखना, चित्रों और शब्दों को साथ रखना... मैं खुद अपनी किताब बना सकता था।"

नन्हे लेखकों और चित्रकारों के लिए वे कहते हैं, "कोई काम इसलिए करो कि तुम उससे प्यार करते हो... हर रोज़ लिखो और चित्र बनाओ... और जब चित्र बनाओ तो अपने ही तरीके से... क्योंकि कलाकार तो तुम हो। तुम्हारी चित्रकारी ही तुम्हारी पहचान है, और फिर बड़े-बड़े कलाकारों के चित्रों को भी देखो – पिकासो, रेमब्राँ, गोया, पोलेक आदि... देखो कि उन्होंने क्या बनाया है... देखो कि चित्रकारी करने के कितने सारे तरीके हैं। लेखक बनने के लिए... लिखो... एक डायरी रखो और रोज़ उसमें लिखो... अगर तुम हर रात सिर्फ दो ही लाइनें लिखो... तो भी साल के अन्त में तुम्हारे पास... 730 लाइनें हो जाएँगी।"

एकलव्य का परिचय

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है। यह पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य है ऐसी शिक्षा जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो, और जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय से बाहर, घर में भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। इसमें किताबें तथा पत्रिकाएँ एक अहम भूमिका निभाती हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में किया है। बच्चों की पत्रिका ***चकमक*** के अलावा ***स्रोत*** (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर) तथा ***संदर्भ*** (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान व बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ तथा सामग्री आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की है।

वर्तमान में एकलव्य मध्यप्रदेश में भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया, देवास, इन्दौर व शाहपुर (बैतूल) में स्थित केन्द्रों तथा हरदा, उज्जैन और परासिया (छिन्दवाड़ा) में स्थित उपकेन्द्रों के माध्यम से कार्यरत है।



